अध्याय पंचम
शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–5

शोध सुझाव एव निष्कर्ष

5.0.प्रस्तावना

प्रारंभिक शिक्षा पूरी शिक्षा व्यवस्था की आधारशीला है जिसका प्रभाव शिक्षा के सभी स्तरों पर परिलक्षित होता है। यह जीवन की बुनीयाद है जिस पर प्रगति की बहुमंजिली इमारतें खडी की जा सकती हैं।

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा के संन्दर्भ में विश्व स्तर पर काफी जागरुकता आई है। भारत सहित विश्व के लगभग सभी देश इस पर अधिकाधिक धन व्यय करके अनेक परियोजनाओं का संचालन कर रहे हैं। जिसे प्राथमिक स्तर पर सार्वभौमिक नामांकन तथा गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

भारतीय संविधान की 45वीं धारा में यह तय किया था कि राज्य इस संविधान के कार्यान्वित किये जाने के 10 वर्ष के अंदर सभी बच्चो को जब तक कि वे 14 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं कर लेतें, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की चेष्टा प्रदान करेगा। पर संविधान की 10 वर्ष की अवधि समाप्त होने पर भी शिक्षा का लक्ष्य पूर्ण नहि हो पाया। इस लिए सभी राज्यों के शिक्षा मंत्रीयों ने 1998 मे यह संकल्प किया कि सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा एक मिशन के रुप मे स्वीकार करके संचालित की जानी चाहीए। इस संम्मेलन की सिफारीशों के आधार पर ''सर्व शिक्षा अभियान योजना '' विकसीत की गई, जिसमें सभी को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करने का लक्ष्य रखा गया। जिसे नवम्बर, 2000 में मंजुर कीया गया इतना ही नहि अभी थोडे समय पहले 5 अगस्त, 2009 में संसद भवन में बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए 'बच्चों का अधिनियम ' यानी कि

'शिक्षा का अधिकार 2009' विधेयक पेश किया गया। जो पारित हो कर 1,अप्रैल, 2010 से पूरे भारत में लागु किया गया।

प्रारंभिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने हेतु विविध योजनाओ का अमलीकरण किया गया। जिसमें से सर्व शिक्षा अभियान योजना के अंर्तगत विविध योजना लागु की गई। इसमें से एक योजना है – शिक्षक अनुदान/टी. एल.एम. अनुदान जिसमें हर एक शिक्षक को अध्ययन अध्यापन कार्य मे उपयोगी साधन सामग्री निर्माण करने हेतु वर्ष की शरुआत में ही 500 रुपिये का अनुदान दिया जाता है। इस योजना की अवधि 2010 तक की है। इसलीए शोधकर्ता द्वारा इस योजना की वर्तमान स्थिति जानने के लिए इस योजना पर कुछ प्रश्न उठाकर यह शोधकार्य किया गया।

शोध सारांश :–

5.1. शोध शिर्षक :–

सर्व शिक्षा अभियान योजना के अन्तर्गत दिया जा रहा अध्ययन अध्यापन सामग्री अनुदान की उपयोगिता एक अध्ययन

5.2. अनुसंधान के उदेश्य

- शिक्षक द्वारा खरीदे गये या तैयार किए गए टी.एल.एम.का शैक्षिक प्रवृत्ति में संबंध ज्ञात करना ।
- खरीदे गये और बनाये गये टी.एल.एम.और विषयवस्तु के बीच सम्बंध ज्ञात करना ।
- शिक्षक द्वारा टी.एल.एम.का उपयोग होता है या नहीं ज्ञात करना ।

5.3 कियात्मक परिभाषाए :-

1. **टी.एल.एम.(TLM) :–** अध्ययन अध्यापन सामग्री/ शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य में उपयोगी साधन सामग्री।

2. **टी.एल.एम.अनुदान :–** अध्ययन अध्यापन सामग्री अनुदान यानि कि "विद्यार्थीओं की सहभागीता से अध्ययन साधन का निर्माण करने हेतु अनुदान"

5.4 शोध प्रश्न :-

- ❖ क्या शिक्षक द्वारा खरीदे गये या तैयार किए गए टी.एल.एम.का शैक्षिक प्रवृत्ति में संबंध है ?
- ❖ क्या खरीदे गये और बनाये गये टी.एल.एम.और विषयवस्तु के बीच कोई सम्बंध है ?
- ❖ शिक्षक द्वारा टी.एल.एम.का उपयोग होता है या नहीं ?

5.5. शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य मे शोधकर्ता ने वर्णात्मक विधि का प्रयोग करके सर्व विधि, विद्यार्थी मुलाकात ओर निरीक्षण प्रयुक्ति का प्रयोग किया गया है।

5.6. जनसंख्या:-

प्रस्तुत शोध कार्य में गुजरात राज्य के 26 जिलो में से साबरकांठा जिला चुना गया हैं। साबरकांठा जिले की कुल 13 तहसील में से इडर तहसील को चुना गया है। इडर तहसील में कुल 28 ह्युथ शाला है। 28

झुथ शाला में से एक बडोली झूथ शाला चुनी गई है। 28 झूथ शाला शोध की जनसंख्या निधारित की है।

5.7. न्यादर्श की प्रविधि :-

न्यादर्श चयन करने के लिए अनेक विधियों का शोधकार्य में उपयोग किया जाता है। जिसमें संभावना न्यादर्श (Probability Sampling), असंभावना न्यादर्श (Non Probubility Sampling) ऐसे दो प्रकार हैं। उसमें से प्रस्तुत अध्ययन में संभावना न्यादर्श की दैव न्यादर्श (Random Sampling) विधि का उपयोग किया गया है।

5.8. न्यादर्श चयन की विधि :-

प्रस्तुत अध्ययन में संशोधनकर्ता ने दैव न्यादर्श (Random Sampling) विधि में लोटरी विधि का प्रयोग किया। इसमें प्रथम संशोधनकर्ता ने गुजरात राजय के 26 जिलो की पुड़िया बनाई उसको डिब्बे मे डालकर एक चिठ्ठी/पर्ची निकाली गई उसमें साबरकांठा जिला आया। उसके बाद साबरकांठा जिले के 13 तहसील की चिठ्ठिया बनाई और एक डिब्बे मे डालकर तहसील चुना और उसके बाद झूथ शाला की चिठ्ठिया बनाकर एक झूथ शाला का चयन किया।

5.9. न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने लोटरी विधि द्वारा इडर तहसील की 28 झूथ शाला में से बडोली झूथ शाला मे से 7 शाला का न्यादर्श चयन किया।

5.10. प्रदत्त संकलन :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिए वर्णानात्मक अनुसंधान की सर्वे पद्यति का उपयोग करके निम्न साधनों का प्रयोग करके प्रदत्त संकलन किया।

➢ प्रयोग किए गए साधन (Tools)

(1)) टी.एल.एम.चेकलिस्ट (2) साजात्कार (3) निरीक्षण

5.11. प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया –

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण तीन स्तर में किया गया।

1. TLM मौजूद है या नहीं।
2. TLM का विषयवस्तु से संबंध है या नहीं विश्लेषण करना।
3. TLM का कक्षा में उपयोग हो रहा है या नहीं।

- TLM मौजूद है या नहीं इसके लिए TLM चैकलिस्ट का उपयोग किया गया।
- TLM कं विषयवस्तु से संबंध है या नहीं इसके लिए पाठ्यपुस्तक और विद्यार्थी साक्षात्कार का उपयोग किया गया।
- TLM का कक्षा में उपयोग हो रहा है। इसके लिए विद्यार्थी साक्षात्कार का उपयोग किया गया।

5.12 प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण :-

1. गुणात्मक प्रदत्तों के लिए :-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा गुणात्मक प्रदत्त के लिए साक्षात्कार और निरीक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को गुणात्मक/वर्णानात्मक रूप में शिक्षकों के व्यूह के मुताबिक दर्शाया गया हैं।

5.13. निष्कर्ष :-

शिक्षा से विद्यार्थीयो का पुनःसामाजिकीकरण करने में शिक्षक एक पुल का कार्य करता है। क्योकि बालक का प्रारंभिक सामाजिकी करण उसके परिवार मे होता है। वह परिवार से कुछ सीखकर आता है उसे शाला मे समायोजन करने के लिए शिक्षक द्वारा पुराने ज्ञान मे वृद्धि करके नया ज्ञान प्रदान करना होता है। निर्माण करना होता है। बालक के सर्वांगिण विकास के लिए शिक्षा एक नीवरुप भूमिका निभाती है।परंतु कुछ कारणे से शिक्षक बालक की प्रारंभिक सामाजिकीकरण की प्रक्रीया को विकसित करने में असफल रहते हैं। बालक के विकास के लिए वर्तमान समय में शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता हैं।इस लिए राष्ट् ओर राज्य कक्षा पे विविध योजनाए बनाइ गइ हैं। इसमे से एक योजना है सर्व शिक्षा अभियान, जिसके अंर्न्तगत प्राथमिक शाला के सभी शिक्षक को टी.एल.एम. अनुदान दिया जाता हैं। यह अनुदान की उपयोगीता पे शोधकार्य करके प्राप्त प्रदतो का विश्लेषण किया गया, जिसमें से निम्न निष्कर्ष निकला हैं।

शोध में प्रयुक्त सभी शाला में कक्षा 5 के सभी विषय के टी.एल.एम. मोजुद हैं। यह सभी शाला में से दो शाला में टी.एल.एम. मौजुद हैं पर उसके उपयोग से विद्यार्थी के ज्ञानात्मक स्तर में विकास नहीं हो रहा हैं। यानि कि, टी.एल.एम. में समाई हुई विषयवस्तु की माहिती ज्ञान के रुप में तबदिल नहीं

हो पा रही हैं क्योकि, टी.एल.एम का उपयोग बहोत कम होने के कारण टी. एल.एम सामग्रीं रुप में शाला में मोजुद हैं पर वह ज्ञानात्मक रुप में तबदिल नहीं हो पा रहा, इस संदर्भ मे शिक्षको से साक्षात्कार करने पर जानने मिला कि यह शाला मे शिक्षको की कमी हैं। एक शिक्षक दो कक्षा संभाल रहा हैं और उपर से सरकार द्वारा विविध कार्यो में उनको समाविष्ट किया जाता हैं। ईसके अलावा सी.आर.सी. प्रशिक्षण और परिषद कार्यक्रम में भी शिक्षक को आनाजाना रहता हैं। इसलिए कक्षा में पाठ्यक्रम को पूरा करने की जल्दी मे अध्यापन कार्य किया जाता है। इसी कारण शिक्षक और विद्यार्थी का कक्षा में अध्ययन अध्यापन का आंतर पारसपारिक व्यवहार के संम्बंध का आकर्षण निम्न होता हैं। उसीके कारण अध्ययन अध्यापन सामग्री से ज्ञान का निर्माण करने में शिक्षक कोई श्रद्धा नहीं दिखाता। जिससे टी.एल.एम.जो भौतिक रुप से शाला मे मोजुद होने के बावजुद भी ज्ञानात्मक रुप में तबदिल नही हो पा रहें।

उपयुक्त विवरण का विश्लेषण करने से यह पता चलता है कि कक्षा में उपयोगी सभी टी.एल.एम. का विश्लेषण खुद शिक्षक द्वारा नहीं किया जा रहा हैं पर उसे उपर से बताया जाता है। जिससे शिक्षक को टी.एल.एम.का विषयवस्तु के विकास के साथ व्यवस्थापन करने में मुश्केली होती है। विषयवस्तु के साथ संबंधित टी.एल.एम.बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है, उसके बावजुद भी यह कमी देखने को मिलती हैं; क्योंकि टी.एल.एम. अनुदान को खर्च करने में ज्यादा ध्यान दिया जा रहा हैं। पर उन्हीं टी.एल.एम.को उपयोग में लाने में कम दृष्टिकोण रखा जाता है ।

5.14. टी.एल.एम. अनुदान योजना मे सुधार के लिए सुझाव :–

- ❖ टी.एल.एम. अनुदान योजना मे सुधार के लिए शाला स्तर पर या संकुल स्तर पर विषयवस्तु विश्लेषण मे शिक्षको से चर्चा करके टी.एल.एम. का निमार्ण करना चाहिए और प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- ❖ कक्षा मे आंतर पारस्पारिक व्यवहार को बढाना चाहिए। यानि कि शिक्षक– विद्यार्थी के आंतरव्यवहार को बढाना चाहिए।
- ❖ शला स्तर पर तैयार टी.एल.एम. लाने की बजाय टी.एल.एम. का निर्माण किया जाए, जिसमे विद्यार्थी की सहभागीता ज्यादा लेनी चाहीए।

5.15. भावी शोध हेतु सुझाव :–

- ❖ शालाओं में टी.एल.एम. का उपयोग स्तर और उपलब्धि के बीच का संबंध – एक अध्ययन।
- ❖ विषयवस्तु और टी.एल.एम. के मध्य के संबंध का ज्ञान शिक्षक के पास कितना है – एक आलोचनात्मक अध्ययन।